FOR PRIVATE CIRCULATION ONLY

हल्ला बोल

SALAAM BOMBAY FOUNDATION

■ ISSUE 10 ■ JANUARY 2010

तम्बाकू के विरुद्ध लड़ाई

www.salaambombay.org

बहुत खुशी महसूस हो रही है। पिछली बार भी हमारी टीम जीती थी और इस साल भी। इसका पूरा श्रेय मैं मेरी टीम को देता हूँ। हमारी टीम में अच्छे खिलाड़ी हैं जो सफल टीम के लिए ज़रूरी हैं जैसे स्ट्रॉन्ग बैटिंग साइड, पेस और स्पिनर गेंदबाज़। पूरी टीम ने जोश के साथ फाइनल मैच खेला। हमने विपक्षी टीम के सामने 115 रनों का लक्ष्य रखा। हमारी टीम में ज़ाफर अन्सारी और प्रदीप वाडेकर का प्रदर्शन सबसे अच्छा रहा। बैटिंग के वक्त ऑडियन्स योगेश....योगेश पुकार रहे थे, इससे मेरा आत्मविश्वास और भी बढ़ गया। जीतने के बाद मैंने मीडिया के लोगों से पहली बार बात की। पहले तो ड़र लग रहा था, पर बाद में बहुत अच्छा लगा।

योगेश मोरे

उप कप्तान, डायनमाइट्स

ब्रबॉन स्टेडियम पर खेलना हमारे लिए बहुत खुशी की बात थी। उस पर फाइनल जीतना तो एक पर एक फ्री जैसी बात हुई। हमारी जीतने की वजह है हमारी टीम! मैदान पर जाने से पहले ही हमने तय किया था कि कुछ भी हो जाए हम कम से कम गलतियाँ करेंगे और अच्छा परफॉर्मेन्स देंगे। फील्डिंग और स्टम्प टू स्टम्प बॉलिंग की वजह से हम जीत हासिल कर सके। हमारी जीत का श्रेय हमारे कोचेज़ को भी जाता है। उन्होंने खेल की जो तकनीक बताई हमने उसे ध्यान में रखा। वहाँ पर आये हुए मान्यवरों के हाथ से बक्षीश लेना, मीडिया के साथ बात करना हमारे लिए एक अलग ही अनुभव था। आगे जाकर हम अच्छा खेलेंगे और अच्छी पढ़ाई भी करेंगे।

रोहित नाडकर

कप्तान, रेजिंग बुल्स

जो जीता वही सिकन्दर

9 दिसंबर का दिन ब्रबॉन स्टेडियम में यादगार रहेगा। लिटिल मास्टर्स चैलेंज ट्रॉफी के लिये चार टीमों में क्रिकेट के मैदान पर घमासान युद्ध हुआ। रेजिंग बुल्स (Raging Bulls) और डायनमाइट्स (Dynamites) टीम विजेता के रूप में उभर कर सामने आईं। पहला मुकाबला अण्डर 17 की दो टीम - माइटी वॉरियर्स (Mighty Warriors) और रेजिंग बुल्स (Raging Bulls) के बीच में हुआ। रेजिंग बुल्स के कप्तान ने टॉस जीतकर पहले फील्डिंग करने का निर्णय लिया। कुमार गायकवॉड ने केवल तीन रन देते हुए 2 विकेट लिये। माइटी वॉरियर्स की टीम सिर्फ़ 48 रनों के स्कोर पर ऑल आऊट हो गई। रेजिंग बुल्स के लिये 48 रनों का स्कोर बाँये हाथ का खेल साबित हुआ। केवल 6 ओवर और 3 गेंदों में यह स्कोर अर्जित किया।

दूसरा मैच कोर ग्रुप की टीम डायनमाइट्स (Dynamites) और थंडर स्टॉर्म (Thunder Storm) के बीच में था। डायनमाइट्स ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाज़ी करने का निर्णय लिया और थंडर स्टॉर्म के लिये 115 रनों का लक्ष्य रखा। इसमें प्रदीप वाडेकर ने केवल 8 गेंदों पर 30 रनों की धुआँधार पारी खेली। उसने 4 छक्के मारते हुए विरोधी टीम को हैरान कर दिया। जब थंडर स्टॉर्म की बैटिंग की बारी आई तो वह दस ओवर में केवल 94 रन ही बना पाये।

मेरी सबसे फेव्हरेट टीम डायनमाइट्स है और मुझे खिलाड़ियों का उत्साह देखकर बहुत अच्छा लग रहा है। आज समाज में तम्बाकू के खिलाफ़ कार्य करना बहुत ज़रूरी है। सुपर आर्मी के जवान जिस तरह तम्बाकू के खिलाफ़ समाज में काम कर रहे हैं उसकी मै तारीफ करती हूँ। मैं सभी बच्चों को ये मैसेज देना चाहती हूँ कि शारीरिक ताकत बनाए रखने के लिए और अच्छा खिलाड़ी बनने के लिए किसी भी प्रकार के तम्बाकू सेवन से दूर रहना ज़रूरी है।

नीतू चंद्रा

अभिनेत्री

मुझे हमेशा से ही बच्चों के बीच आकर खुशी महसूस होती है। लेकिन आज यही खुशी दुगुनी हो गई है क्योंकि ये बच्चे अब मेरे परिवार का हिस्सा हैं। यकीनन खेल खिलाड़ी को तम्बाकू से दूर रखने में बहुत मदद करता है। एक खिलाड़ी कभी भी तम्बाकू सेवन करके अच्छा खिलाड़ी नहीं बन सकता।

मीर रजंन नेगी

हॉकी कोच

यहाँ आकर बहुत अच्छा लग रहा है। मुझे ऐसा लग रहा है कि जैसे मैं इंडियन टीम को खेलते हुए देख रहा हूँ। आज के मैच ने मुझे यहाँ हुए इंडिया-श्रीलंका मैच की याद दिला दी। मैं खुद एक क्रिकेट क्लब का हिस्सा हूँ, पर ऐसा मैच पहले कहीं नहीं देखा। यहाँ तो छक्के पे छक्के और चौक्के पे चौक्के लग रहे हैं।

किरण मोरे

क्रिकेटर

यहाँ आकर मेरा मन भर आया। इन बच्चों का उत्साह देखकर बहुत अच्छा लग रहा है। अगर ऐसे ही काम चलता रहा और इतने ही दिलचस्प प्रोग्राम होते रहे तो तम्बाकू का खात्मा किया जा सकता है। क्रिकेट के ज़रीए लोगों तक मैसेज पहूँचाना बहुत ही नया और इंटरेस्टिंग तरीका है।

हिमांशू रॉय

जॉइंट कमिश्नर,

मुंबई पुलिस

हमें हमेशा बड़े सपने देखने चाहिएँ और उनको पूरा करने की निरंतर कोशिश करते रहना चाहिए। सलाम बॉम्बे फाउन्डेशन ने सपना देखा कि बच्चों का भविष्य और भी बेहतर बने। आज मुझे ब्रबॉन स्टेडियम पर सलाम बॉम्बे फ़ाउन्डेशन का यह सपना सच होते हुए दिख रहा है।

चंद्रा अय्यंगार

(सचिव, गृह मंत्रालय,

महाराष्ट्र)

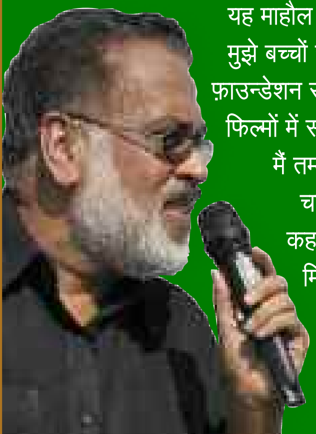

यह माहौल मुझे बहुत अच्छा लगता है क्योंकि मुझे बच्चों से प्यार है। मैं जब से सलाम बॉम्बे फ़ाउन्डेशन संस्था से जुड़ा हूँ, तब से मैं अपनी फिल्मों में स्मोकिंग के सीन्स नहीं दिखाता हूँ। मैं तम्बाकू की समस्या पर फिल्म बनाना चाहता हूँ। मैं तम्बाकू मुक्ति संबंधित कहानी ढूंढ रहा हूँ। जिस दिन कहानी मिल जाएगी इस समस्या पर अवश्य ही फिल्में बनाऊँगा।

जगमोहन मूंदड़ा

फिल्म निर्देशक

HALLA BOL REPORTERS

1. ऐश्वर्या बाविस्कर - राजावाड़ी म्युनि. सेकं. स्कूल. 2. प्रदणया दवंडे - राजावाड़ी म्युनि. सेकं. स्कूल 3. अरूणा पवार- राजावाड़ी म्युनि. सेकं. स्कूल 4. सुष्मिता श्रीमंत - कांदिवली म्युनि. सेकं. स्कूल 5. मनमोहन पाकर- कांदिवली म्युनि. सेकं. स्कूल 6. नताशा घोलप- भायखला म्युनि. सेकं. स्कूल 7. ताहिर शेख- दादर वुलेन मिल म्युनि. सेकं. स्कूल

चलो नया मिक्की माऊस बनाएं!

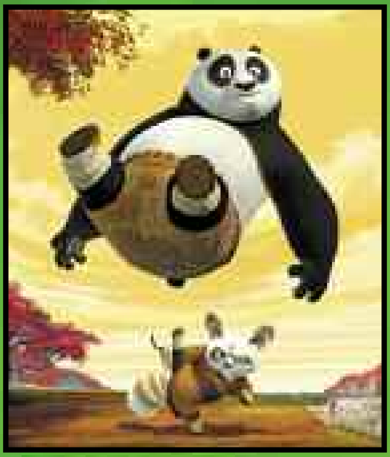

हम लोगों में से मिक्की माउस (Mickey Mouse) की शरारतें भला कौन भूल सकता है। यह वाल्ट डिज़्नी (Walt Disney) द्वारा रचित एक ऐसा किरदार है जो हर किसी के बचपन का हिस्सा है।

एनिमेशन (Animation) शब्द को लेटिन (Latin) भाषा के "एनिमा" शब्द से लिया गया है, जिसका मतलब है आत्मा (Soul) यानि कि बेजान किरदार (Character) में जान भर देना।

यह कला गुफा में रहने वाले लोगों के साथ शुरू हुई जो पत्थरों पर अलग-अलग दृश्यों की रचना करते थे।

एनिमेशन, मीडिया के एक विशेष रूप में जाना जाने लगा। आज यह एक मल्टी मिलियन डॉलर (Multi Million Dollar) व्यापार है जहाँ रोज़गार के बहुत सारे पर्याय उपलब्ध हैं। विदेश की बड़ी एनिमेशन कम्पनियाँ जैसे-सोनी (Sony),वाल्ट डिज़्नी (Walt Disney), आईमेक्स (Imax) भारत में अपना काम जमा रही हैं जिसकी वजह से कुछ ही सालों में यह कारोबार बहुत बड़े पैमाने पर पहुँच गया है।

3डी एनिमेशन के लिए टीम के साथ मिलकर क्रियेटिव (Creative) तरीके से सोचने की ज़रुरत होती है। 3डी एनिमेशन में कई प्रकार के काम होते हैं:-

1. मौडलर (Modeler)
2. लेआउट आर्टिस्ट (Layout Artist)
3. क्लीन-अप आर्टिस्ट (Clean-up Artist)
4. स्कैनर ऑपरेटर (Scanner Operator)
5. डिजिटल इन्क एन्ड पेन्ट आर्टिस्ट (Digital Ink and Paint Artist)
6. कम्पोज़िटर (Compositor)

एनिमेटेड प्रॉजेक्ट की सफलता में हर व्यक्ति का योगदान महत्त्वपूर्ण होता है।

व्यक्तित्व (Personality)

अगर आप एनिमेशन के क्षेत्र में करियर बनाना चाहते हैं तो आपको सबसे ज़्यादा ज़रूरत पड़ेगी प्रतिभावान विचारों की। सहनशील (Patient) और

कल्पनाशील (Imaginative) होने के साथ-साथ आपको ड्रॉइंग और स्केचिंग भी आनी चाहिए।

एनिमेशन का काम करने के लिए कई घंटो तक लगातार पूरी लगन के साथ कार्य करने की आवश्यकता होती है। साथ ही ज़रुरत होती है काल्पनिक सोच, रंगो और चरित्रों के नए प्रयोग और हमेशा कुछ अलग बनाने और दिखाने की उत्सुकता की।

शैक्षिक योग्यता (Educational Qualification)

- मान्यता प्राप्त बोर्ड से 12वीं की परीक्षा न्यूनतम 45% से पास करने के बाद एनिमेशन में 1 साल का डिप्लोमा या बैचलर्स डिग्री प्राप्त करने के लिए एडमिशन ले सकते हैं
- पोस्ट ग्रेजुएट प्रोग्राम में एडमिशन लेने के लिए किसी भी विषय में बैचलर्स डिग्री प्राप्त उम्मीदवार एडमिशन ले सकता है (आर्टस के छात्रों को प्राथमिकता दी जाती है)
- कम्प्यूटर की प्राथमिक जानकारी होनी चाहिए
- कुछ संस्थानों ने एडमिशन के लिए आवश्यक योग्यताएँ निर्धारित की हैं। आर्किटेक्चर (Architecture), टेक्नोलॉजी एण्ड इंजिनियरिंग (Technology and Engineering), फाइन-आर्टस में डिग्री प्राप्त किए हुए छात्र ही इन संस्थानों में प्रवेश ले सकते हैं। जैसे - इंडस्ट्रीयल डिज़ाइन सेन्टर (Industrial Design Center (IDC)), इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (Indian Institute of Technology (IIT)), इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ डिज़ाइन (Indian Institute of Design (IID))

व्यवसायिक कोर्सेस (Professional Courses)

एनिमेशन और मल्टी मीडिया में बहुत सारे डिप्लोमा, डिग्री प्रोग्राम हैं -

- ट्रेडीशनल एनिमेशन (Traditional animation)
- स्टॉप-मोशन एनिमेशन (Stop-motion animation)
- रोटोस्कोपिंग (Rotoscoping)
- कम्प्यूटर जनरेटेड 3डी व 2डी एनिमेशन (Computer generated 3D and 2D animation)
- क्ले-मेशन (Clay-mation)
- फोटोशॉप (Photoshop)
- ड्रॉइंग (Drawing)

एनिमेशन इंस्टीट्यूट्स (Animation Institutes)

- नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ डिज़ाईन (National Institute of Design (NID (www.nid.edu.com)
- जे. जे. स्कूल ऑफ आर्टस (J.J School of Arts)
- ज़ी इंस्टीट्यूट ऑफ क्रियेटिव आर्टस् (Zee Institute of Creative Arts (ZICA) (www.zica.org)
- इंडस्ट्रीयल डिज़ाईन सेन्टर मुम्बई एण्ड गुवाहाटी (Industrial Design Center (IDC), IIT Mumbai)
- एरीना मल्टी मीडिया (Arena Multimedia (www.arena-multimedia.com)
- टून्ज़ एनिमेशन इंडिया प्राइवेट लिमिटेड (TOONZ Animation India Pvt. Ltd. (www.toonzanimationindia.com)

वेतन (Salary)

एनिमेशन वैसे तो भारत में अभी एक नया क्षेत्र है, पर कम समय में ही यह एक चमकते हुए करियर के रूप में सामने आया है। करियर की शरूआत में एक जूनियर एनिमेटर 12,000 से 15,000 रुपए तक कमा सकता है। 3 से 5 साल तक काम कर चुके सीनियर एनिमेटर का वेतन 24,000 से 35,000 रूपये तक होता है। अधिक प्रतिभाशाली होने पर वेतन ज़्यादा भी हो सकता है।

Straight Talk

Pratima Pal, Animation expert

How did you become an animator?

I come from a small town called Ambernath, located 60 kms from Mumbai. I studied in a Marathi medium school. After completing SSC I did not know which career to choose. The only thing I was good at was making sketches and painting. A friend saw them and suggested that I should study Fine Arts at Sir J. J. School of Arts. After completing the course at J. J., I did a one year course in animation.

What does it take to become an animator?

A course does not make you an animator. A course only teaches you what to do. It is important that you are good at painting, drawing, sketching and you have to be a good story teller. Animation is all about telling a story.

What does your job involve?

I work as the creative director of a company that makes computer and video games. I lead a team of animators. My job is to think of characters (cartoons) like Mogli and imagine what they would do in different situations. My job requires a lot of patience and detailing.

Are you happy with your job?

I love my job. I get to create my own cartoon characters. I get to entertain people. What makes me happy is that some kid sitting in some corner of the world is laughing because of my work.

प्रारम्भिक जीवन

किरण बेदी एक जानी मानी हस्ती हैं जो कि भारत में ही नहीं विश्व भर में अपनी हिम्मत और सामाजिक सेवा के लिए जानी जाती हैं। उन्होंने न केवल एक बेहतर दुनिया का सपना देखा बल्कि उसे पूरा भी किया। उन्होंने जीवन की हर मुश्किल का सामना हँसकर किया। उनके व्यक्तित्व से हमें भी प्रेरणा मिलती है।

किरण बेदी का जन्म जून 1949 में अमृतसर में हुआ। वह अपने माता-पिता, श्रीमति प्रेमलता और श्री प्रकाशलाल पेशावरिया की दूसरी पुत्री हैं। उनके पिता पंजाब में एक जमींदार थे पर उनकी सोच अपने समय के लोगों से बहुत आगे थी। उन्होंने अपनी चारों पुत्रियों को पढ़ाने का सपना तब देखा जब महिलाओं को केवल घर के कार्य योग्य ही समझा जाता था। लड़कियो को उच्च शिक्षा देना एक असामान्य बात थी।

जब किरण सेक्रेड हार्ट कान्वेंट स्कूल (Sacred Heart Convent School) में पढ़ रहीं थीं तभी वह एन.सी.सी. (N.C.C.) में शामिल हुईं। किरण को शुरू से ही खेल में रूचि थी। स्कूल के दिनों में टेनिस उनका मनपसन्द खेल था। यही नहीं, आगे चलकर किरण ने एशियन महिला लॉन टेनिस का खिताब भी जीता।

स्कूल के बाद किरण ने महिला गवर्मेंट कॉलेज में दाखिला लिया, जहाँ उन्होंने राजनीतिक विज्ञान (Political Science) की पढ़ाई की। किरण का मानना था कि यह विषय देश का अच्छा नागरिक बनने में उनका मार्गदर्शन करेगा। इसके बाद उन्होंने पंजाब विश्वविद्यालय से राजनीतिक विज्ञान में परास्नातक (M.A.) की डिग्री हासिल की।

यही नहीं, एम.ए. के बाद उन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय से वकालत (Law) की डिग्री भी हासिल की। 1993 में भारतीय तकनीकी संस्थान, दिल्ली के सामाजिक विज्ञान डिपार्टमेन्ट (Department of Social Science, The Institute of Technology, New Delhi) ने किरण को सामाजिक विज्ञान (Social Science) में पी.एच.डी. Phd.) की उपाधि प्रदान की।

1972 में किरण बेदी भारतीय पुलिस सेवा में प्रथम महिला अधिकारी के रूप में शामिल हुईं।

इसमें है दम

Awards

- Presidents Gallantry Award (1979)
- Women of the Year Award (1980)
- Asia Region Award for Drug Prevention and Control (1991)
- Magsaysay Award for Government Service (1994) - also called the Asian Nobel Prize
- Mahila Shiromani Award (1995)
- Father Machismo Humanitarian Award (1995)
- Lion of the Year (1995)
- Joseph Beuys Award (1997)
- Pride of India (1999)
- Mother Teresa Memorial National Award for Social Justice (2005)

वैवाहिक जीवन

किरण बेदी ने पहले ही यह फ़ैसला कर लिया था कि वह अपना जीवनसाथी स्वयं चुनेंगी। वह अपने पति ब्रिज बेदी को अमृतसर के एक टेनिस कोर्ट में मिली थीं। उन दोनों की पसंद, विचार और उद्देश्य तो एक दूसरे से मिलते ही थे, साथ ही दोनों दिखावे और झूठे रीति रिवाज़ों के भी खिलाफ़ थे। उन्होंने 1972 में एक शिव मंदिर में बिना किसी धूमधाम के शादी की। यहाँ तक कि उन्होंने शादी के रिसेप्शन का खर्चा भी साथ मिलकर उठाया।

किरण और ब्रिज की एक बेटी है, जिसका नाम सैयना है। सैयना भी सामाज सेवा में रूचि रखती हैं। इसके अलावा सैयना अपने पति के साथ मिलकर डॉक्युमेन्ट्री (Documentary) फिल्मों की रचना भी करती हैं।

किरण बेदी ने अपने करियर की शुरूआत राजनीतिक विज्ञान के लेक्चरर के रूप में की। ठीक उसी समय उनका चयन पुलिस सेवा में हुआ और उन्होंने फ़ौरन पुलिस की नौकरी जॉइन कर ली। पुलिस सेवा में उन्होंने अनेक पदों पर काम किया जैसे;

- ट्रैफिक पुलिस कमिश्नर, नई दिल्ली (Traffic Police Commissioner, New Delhi)
- उप इंस्पेक्टर जनरल ऑफ पुलिस, मिज़ोरम (Deputy Inspector General of Police, Mizoram)
- सलाहकार, राज्यपाल चंडीगढ़ (Advisor to the Lieutanent Governor of Chandigarh)
- डायरक्टर जनरल, नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो (Director General of Narcotics Control Bureau)

किरण बेदी किसी से डरती नहीं हैं। उनका कानून सबके लिए एक है, चाहे वह भारत के राष्ट्रपति हों या कोई सामान्य नागरिक। एक बार उन्होंने भारत की प्रधानमंत्री स्व. श्रीमति इंदिरा गाँधी की कार को भी गलत जगह पार्किंग के लिए रोक दिया था।

किरण बेदी ने अन्य क्षेत्रों में भी सफलता हासिल की है जैसे नारकोटिक्स (Narcotics) नियंत्रण, ट्रैफिक व्यवस्था और वी.आय.पी. (V.I.P) सुरक्षा आदि। जब उन्हें तिहाड़ जेल के इंस्पेक्टर जनरल के रूप में नियुक्त किया गया तो उन्होंने जेल की व्यवस्था को सुधारने के लिए कई महत्त्वपूर्ण कदम उठाए। उन्होंने अपराधियों के जीवन को एक नई दिशा दिखाई तथा उन्हें अच्छा नागरिक बनाने के लिए योगा, ध्यान, विपासना की शुरूआत भी की।

किरण बेदी ने दो संस्थानों - नवज्योति (Navjyoti) और इंडियन विजन (Indian Vision) की स्थापना की। इन संस्थाओं के द्वारा वह ड्रग्स मे फँसे कमज़ोर वर्ग के लोगों की सहायता करना चाहती हैं। उनके इस कदम के लिए उन्हें काफ़ी सराहा गया। उन्हें संयुक्त राष्ट्र द्वारा सेर्ज साईट्रॉफ मेमोरियल अवार्ड (Serge Soitiroff Memorial Award) से भी सम्मानित किया गया।

हाल ही में उन्हें पुलिस अनुसंधान एवं विकास के निर्देशक के रूप में नियुक्त किया गया।

HEROES OF THE MONTH

सलाम बॉम्बे फ़ाउन्डेशन वालों ने हम सबको जो जानकारी दी उसी के आधार पर हमने अपनी चॉल के लोगों को तम्बाकू से होने वाली हानि के बारे में बताया। और उन्हें तम्बाकू छोड़ने के लिए भी कहा है। हमें विश्वास है कि वह हमारी बातों पर अमल करेंगे। मैंने अपने एरिया के आस-पास की दुकानों में जाकर उनको भी यह जानकारी दी और उनसे बच्चों को तम्बाकू नहीं बेचने के कानून के बारे में बताया। मैं जहाँ भी अपने रिलेशन में जाता हूँ वहाँ उन लोगों को यह जानकारी देता हूँ। कुछ दिन पहले जब मैं गाँव गया था तो गाँववालों को भी तम्बाकू के बारे में बताया। इस विचार को सुनकर मेरे गाँववालों ने तम्बाकू छोड़ने का वादा भी किया।

मो. अल्ताब खो. बोरीवली म्युनि. सेकं. स्कूल

एक दिन मैंने जे. जे. हॉस्पिटल जाने के लिए टैक्सी पकड़ी। टैक्सी से एक अंकल उतरे और मैं बैठ गया। तभी मेरी नज़र सीट पर गई और मैंने देखा कि वहाँ पर एक महंगा मोबाइल पड़ा था। मैंने उसे उठाकर रख लिया। कुछ देर बाद उनकी पत्नी का फ़ोन आया तो मैंने बताया कि अंकल अपना फ़ोन भूलकर चले गए हैं। तभी उन अंकल को भी याद आया और वह बार-बार फ़ोन करने लगे। मैंने उनसे बात की, अंजिर वाड़ी का पता दिया और कहा कि आप इधर आकर अपना फ़ोन ले जाइए। वो कुछ देर बाद वहाँ पहुँचे और अपना फ़ोन वापिस पाकर काफ़ी खुश हुए। वो मुझसे बोले तुम अल्लाह के अच्छे बंदे हो। वो मुझे ईनाम के तौर पर पैसे भी देना चाहते थे पर मैंने नहीं लिए क्योंकि मुझे लगता है कि यह तो मेरा फ़र्ज़ था।

मो. रफीक अब्बास,
ईस्ट भायखला म्युनि. सेकं. स्कूल

एक बार जब मैं अपनी मम्मी के साथ बाहर गई तो वडा पाव देखकर मम्मी से लेने को कहा। मम्मी ने मुझे दो वडा पाव लेकर दिए। तभी मैंने देखा की एक गरीब बच्चा मुझे ही देख रहा था। उसे देखकर मुझे लगा कि उसे ज़रूर भूख लगी होगी। मैं खा रही थी और उसके पास कुछ नहीं था, यह मुझे अच्छा नहीं लगा। मैंने मम्मी से उस बच्चे को भी एक वडा पाव दिलाने के लिए कहा। मम्मी ने उस बच्चे को वडा पाव दिला दिया। ऐसा करके मुझे बहुत खुशी हुई।

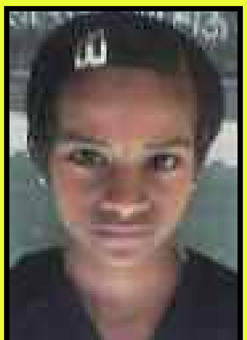

सोनिया राव, अभ्युदयनगर म्युनि. सेकं. स्कूल

तंबाखू निर्मूलन कार्यात आमची शाळा सदैव तुमच्यासोबत आहे

अनुयोग विद्यालयासोबत मी गेली १५ वर्षे कार्यरत आहे. माझ्या शाळेतील मुलं आपल्या वस्तीमध्ये रोज अनेक समस्या पाहत असतात आणि त्याचे अनुकरण करतील हयाची भीतीही आम्हाला असते. त्यात व्यसनाधीनता ही आजच्या समाजातील सर्वात मोठी समस्या आहे. मुलांना तंबाखू, गुटखा सेवनाच्या धोक्यापासून दूर ठेवणे गरजेचे आहे. हे कार्य सलाम बॉम्बे फाउन्डेशनमार्फत उत्तम रीतीने केले जात आहे. शाळेत आम्हीही विद्यार्थ्यांना समजावत असतो की कधीही तंबाखूजन्य पदार्थांचे सेवन करू नका. मी शाळेत कोणीही तंबाखू, गुटखा सेवन करणार नाही हयाचा पाठपुरावा करत असतो. शाळेत सर्व इयत्तांच्या मुलांना तंबाखूचे दुष्परिणाम माहीत व्हावे हयासाठी आताच ९ वीच्या विद्यार्थ्यांकडून ध्वनिक्षेपकावरून तंबाखू विरोधी घोषणा, संदेश दिल्या गेल्या. सलाम बॉम्बेच्या सर्व कार्यक्रमांची शाळेत योग्यरीत्या अंमलबजावणी व्हावी अशी माझी इच्छा असते. मुले जेव्हा सुपर आर्मीच्या स्पर्धेसाठी तंबाखूविरोधी नाटक आणि गाणी तयार करतात त्यावेळी मी जातीने लक्ष देतो. आता शाळेत तंबाखूविरोधी चर्चासत्र, निबंध स्पर्धा घेण्याचा मानस आहे. सलाम बॉम्बेला आम्ही आश्वासन देतो की तंबाखू निर्मूलन कार्यात आमची शाळा सदैव तुमच्यासोबत आहे.

अनंत कांबळे, साहाय्यक शिक्षक, अनुयोग विद्यालय खार (पूर्व)

Salaam Bombay Youth Club recently participated in the Sathaye College (Vile Parle) fest. The fest called BYTE-IT was organized by the IT department of college. The club had put up a stall at the venue where they tried to create awareness among other youth on the issue of tobacco. They came up with the fresh and innovative approach of SHOUT- Students Helping Others Understand Tobacco.

SHOUT

Students Helping Others Understand Tobacco

It served as a trigger point and got an overwhelming response from youth. The small group of fifteen took turns over three days reaching out to more than 1500 students from various colleges who participated in the fest. A few members of the group also presented an anti-tobacco skit during the closing ceremony. It was appreciated by college authorities and well received by the audience. The fest served as a platform for youth to further their confidence and efforts of making a difference in the society.

SHOUT - Students Helping Others Understand Tobacco. An interesting thought initiated by Salaam Bombay Youth Club. And I am proud to be a part of it.

Our idea is to reach out to youth across Mumbai and make them a part of our tobacco control campaign.

We participated in the annual IT fest of Sathaye College held during 17th to 19th of December.

It took us several meetings and a lot of planning to put our thoughts together. We then came up with the interesting idea of IT- Information Technology Vs. Information on Tobacco.

It is difficult for me to describe my first reaction to it. But I believe a good thought motivates us for good deeds.

We got a very good response for our stall. There were many things to do; there were games like crossword and tobacco quiz which were intertwined with the favourite snake n ladder game. Teenagers were anxious to win the T-shirt (given out as a prize). They found the slogan (Proud To Be Tobacco Free) written on it really cool.

They not only participated but many of them also wished to be a part of our club and signed in. We were satisfied that our efforts would not go waste. But I believe we still have to go a long way.

Asawari Dharap, Member, Salaam Bombay Youth Club

This was the first time I volunteered for an NGO. And it was really a great experience, something that I would remember for life. I joined the youth club around August. At that time, we were just a bunch of youth with ideas and a lot of energy. I had no idea what to expect from them. Putting up a stall at Sathaye college fest was really an innovative idea which worked well with youth. They were made aware about the harms of tobacco while having fun. We had two information sheets on tobacco and honestly I was surprised to see students reading them sincerely. There was a slogan competition which got great response as well. They came up with interesting slogans in just a few minutes. Our other members performed an anti tobacco skit which got a lot of appreciation. Overall it was a great experience and good team work. We were all from different colleges of the city but what brought us together was the hope of doing something against tobacco which ruins many lives. It has been a learning experience for all of us. I want to end here with a slogan by one of the youth "I CAN AND I WILL SHOUT"

Priyanka Vichare,
Member,
Salaam Bombay
Youth Club

करायचे पोलीस स्टेशन तंबाखूमुक्त

ताडदेव पोलीस स्टेशनच्या पोलिसांनी ठरवले आहे की आजपासून आपले पोलीस स्टेशन तंबाखूमुक्त करायचे. २१ डिसेंबरला ताडदेव मनपा शाळा सुपर आर्मीच्या जवानांनी सकाळच्या परेडमध्ये उपस्थित पोलिसांना तंबाखूपासून दूर राहण्याची विनंती केली. एका तासाच्या माहिती सत्रात पोलिसांना सिगरेट आणि अन्य तंबाखू उत्पादने कायदा, २००३ बाबतही माहिती दिली. लहान मुलांना तंबाखू विकणाऱ्यांवर व शाळेच्या आजूबाजूला तंबाखू विक्री करणाऱ्यांवर कार्यवाही करावी अशी सुपर आर्मीच्या जवानांनी पोलिसांना विनंती केली. पोलिसांनीही आपले पोलीस स्टेशन तंबाखूमुक्त करणार ह्यासाठी शपथ घेतली व त्याबाबत सह्या केल्या.

तंबाखू निर्मूलन विषयावर प्रशिक्षण

उत्तर महाराष्ट्र विद्यापीठातील प्रौढ व निरंतर शिक्षण आणि विस्तार सेवा विभागाने तंबाखू निर्मूलन विषयावर प्रशिक्षण आयोजित केले होते. हयात जळगाव, धुळे व नंदुरबार जिल्हयांतील ४० प्राध्यापक उपस्थित होते. ह्या प्रशिक्षणासाठी सलाम बॉम्बे फाउन्डेशनला विद्यापीठाने आमंत्रित केले होते. तंबाखूची युवक वर्गात वाढत असणारी समस्या ह्यावर तोडगा काढण्यासाठी ह्या प्रशिक्षणात नियोजन करण्यात आले.

आशाएं खिलें दिल की

सलाम बॉम्बे डॉन्स अकादमी के 30 बच्चों ने 9 दिसम्बर 2009 को कथ्थक नृत्य की शानदार प्रस्तुति 7 हज़ार बच्चों के सामने ब्रबॉन स्टेडियम में की। जब इन बच्चों ने गीत 'आशाएं खिलें दिल की...' (फिल्म-इकबाल) पर नृत्य करना शुरू किया तो सभी दर्शक बच्चे और वहाँ उपस्थित गणमान्य अतिथि मन्त्रमुग्ध हो गए। सब लोगों ने तालियाँ बजाकर उनका उत्साह बढ़ाया। सातवी क्लास में पढ़ने वाले इन बच्चों का इतने बड़े मंच पर यह पहला प्रदर्शन था। इतनी अच्छी तैयारी करने के लिए इन बच्चों को सिर्फ 15 दिन का समय मिला।

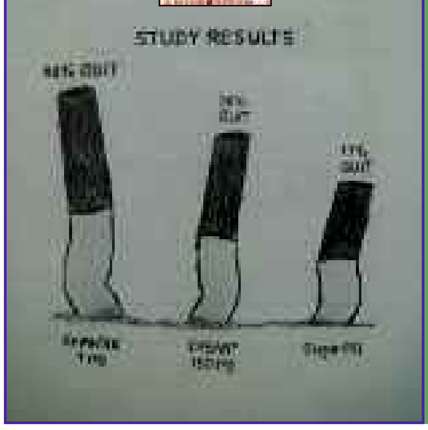

पुस्तकाची किमया

माझ्या शाळेतील सर्व विद्यार्थ्यांना तंबाखूबाबतची अधिक माहिती मिळावी आणि ह्यातून आम्हा विद्यार्थ्यांचा एक तंबाखू विरुद्ध लढा उभा राहावा हयासाठी ही हस्तपुस्तिका बनवली. हया पुस्तिकेत तंबाखूचे दुष्परिणाम, तंबाखूबाबत आकडेवारी मांडली आहे. हस्तपुस्तिका बनवण्यासाठी माझे वडील, माझे शिक्षक आणि सलाम बॉम्बे फाउन्डेशनचे सूरज सर ह्यांनी प्रोत्साहन दिले. शाळेच्या मुख्याध्यापकांच्या अनुमतीने वाचनालयामध्ये ही हस्तपुस्तिका ठेवली जाईल. हे पुस्तक नक्कीच मुलांमध्ये तंबाखू विरोधी लढ्यासाठी जिद्द निर्माण करेल आणि आपला भारत तंबाखूमुक्त होईल.

सिद्धार्थ उबाळे भाऊसाहेब हिरे विद्यालय सुपर आर्मी

Badrul Ul Huq - Man Of The Series Under 17
5 wickets in 7 overs with 31 runs

Suraj Jhadhav - Best Batsman Under 14
45 runs in 4 matches

Kunal Kulwade - All Rounder Under 14
3 wickets and 20 runs

Rohit Nadkar - Man of the Match Under 17
10 runs in 7 balls with 2 fours and 1 catch

Suraj Shelar - Best Batsman Under 17
34 runs in 4 matches

Jaffar Ansari - Man of the Match Core Team
33 Runs in 28 Balls with 3 stumping

Arjun Rajbhar - Best Bowler Under 17
5 wickets including a hatrick

Louis Antony - Best Fielder Under 17
3 run outs

Akshay Dudam - Best Fielder Under 14
5 stumping in 4 matches

Abhishek Nikam - Best Bowler Under 14
5 Wickets in 8 overs

Dinesh Jadhav - Ashok Mankhad Most Promising Player
115 runs in 75 balls with 19 fours

Kumar Gaikwad - All Rounder Under 17
48 runs and 3 wickets in 4 matches

हमारा मंच

अभिषेक वाघमारे
मोतीलाल म.न.पा शाळा.

संकेत वागले
सरस्वती विद्या मन्दिर

अजरा काळे
साधना विद्यालय

ब्रिजेश बरनवाल
मालाड म.न.पा शाळा

शबनम
स्टेशन चेम्बूर (उर्दू)

वैभव शेट्ये.
विद्या विकास विद्यालय

गोल गोल एक पैसा , गोल गोल
एक पैसा, इस तम्बाकू का असर कैसा ?
तम्बाकू में क्या क्या मिला दिया, खाने वाले को मौत से मिला दिया। कुछ लोगों ने सिगरेट पिया, सिगरेट पीके हवा को प्रदूषित किया। मैंने तम्बाकू खाने वालों को ये बता दिया, उन्होंने तम्बाकू छोड़ने का मुझ से वादा किया। गोल गोल गोल गोल एक पैसा, इस तम्बाकू का रंग कैसा ?
सलाम बॉम्बे ने कमाल किया, तम्बाकू के विरूध्द प्रचार किया।

प्रियंका गुरूदीन राव
अभ्युदयनगर म्युनि. सेकं. स्कूल सुपर आर्मी

तंबाखू खावून आता शेवटची वेळ आली।
चुन्या-तंबाखूने माझी जीवनाची केली होळी।।
ह्या धुंद यौवनात ओठाला सिगरेटचा चटका।
जिभेला स्वाद कळेना, घशातून सूर फुटेना।
स्वप्नातील सूरांचा चोळामोळा झाला।
चुन्या-तंबाखूने जीवनाचा घात केला।।

पुष्पा मोरे
काळबादेवी म्युनि. सेकंडरी स्कूल सुपर आर्मी

लग्नपत्रिका

कोपऱ्यापासून दंडवत विनंती विशेष
तंबाखूच्या कृपेने व गुटख्याच्या आशीर्वादाने

चि. चुना
(कुप्रसिद्ध श्री. टपरीवाले ह्यांचा पुत्र)

ह्यांचा शुभविवाह

चि. सौ. का. सिगरेट
(श्री.कू.क.रा मावा यांची कन्या)

हीजबरोबर काळया रात्री १२ वाजता १२ मि. ह्या काळया मुहूर्तावर करण्याचे योजिले आहे. तरी आपण सहकुटुंब व मित्रासह येऊन वधू -वरांच्या कानाखाली वाजवावे.

आपले खास
श्री व सौ.कॅन्सर, श्री व सौ. हार्ट अ‍ॅटॅक
श्री व सौ. टी.बी. श्री व सौ.दमा
समस्त टपरीबंधू
विवाह स्थळः गावची स्मशानभूमी
प्रमुख पाहुणेः यमराज

जयेश अनंत जाधव, प्रविण अशोक काळे, रितेश संजय सुर्वे
आय. सी. एल. हायस्कूल सुपर आर्मी.

गर्द, चरस, दारू, गुटखा, आपल्याला बसतो चटका. अति सेवनाने होते हानी, राहत नाही शुद्ध वाणी. क्षणिक असते धुंद नशा, आयुष्याची होते दुर्दशा. मुलांबाळांवर येई उपवासाची पाळी, संसाराची राख रांगोळी. वेळेवर मिळेना अन्नपाणी, शरीराची झाली मोठी हानी.

किशोर कांबळे
डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर म्युनि. स्कूल सुपर आर्मी

तम्बाकू तम्बाकू आया रे, कैंसर की बीमारी लाया रे,
धूम्रपान करते समय उससे, कोई बच न पाया रे...
फटाक... फटाक...
गलती ना करना, इस तम्बाकू में बहुत से हैं रसायन,
ये तम्बाकू बड़ा ही सताएगा,
ये जाएगा फिर लौट आएगा, नामोनिशान इसका मिटाएंगे, इसको जड़ से ही हटाएँगे,
फटाक... फटाक...
ये तम्बाकू नहीं आसान, टी.बी., कैंसर का खतरा है
तम्बाकू नहीं खाना..., ये रोग का दरिया है
तम्बाकू खाएगा, बीमारी लाएगा
फटाक... फटाक...
पायल के. सिंह, पॉल राजेंद्र हाई स्कूल सुपर आर्मी

कानून बोले तो...

पक्षियों की चहचहाहट, हवा के झोंके के साथ सुनाई देती पत्तियों की कडकड़ाहट, समुद्र की लहरों की आहट या फिर कार की पॉम पॉम, लाउडस्पीकर की कर्कशता - इनमें से कौन सी आवाज़ आपके कानों को सुकून देती हैं? प्रकृति से आती आवाज़ें ही हमारे मन को शांति का अनुभव कराती हैं।

शोर हमारे लिए हानिकारक है। इससे बहरापन, ह्रदय रोग, तनाव, थकान, एकाग्रता में कमी, सिर दर्द, नींद न आना आदि परेशानियां होती हैं। पूना में हुए एक सर्वे से पता चला है कि वहाँ के 80% ट्रैफिक पुलिस कर्मचारी शोर के कारण बहरे हो गए हैं। लोग अधिक शोर में हिंसक बन जाते हैं। आपको पता ही होगा कि हमारा शहर मुंबई दुनिया का सबसे ज़्यादा ध्वनि प्रदूषण वाला शहर माना जाता है। इसलिए यहाँ के शोर को कम करने की हमारी ज़िम्मेदारी और भी बढ़ जाती है।

भारत सरकार ने 2000 में ध्वनि प्रदूषण नियंत्रण कानून (Noise Pollution Control Act, 2000) बनाया। सरकार ने पहले तो औद्योगिक, व्यावसायिक और आवासीय तौर पर क्षेत्रों (areas) का बँटवारा किया। इन क्षेत्रों में आवाज़ की अधिकतम सीमा (limit) तय की गयी। रात 10 बजे से सुबह 6 बजे तक आवासीय जगहों पर शोर पर पाबंदी है।

इसके अलावा सरकार ने सायलेंस ज़ोन भी बनाए हैं। सायलेंस ज़ोन में अस्पताल, शैक्षणिक संस्थान (स्कूल, कॉलेज), अदालत आदि की सीमा से 100 मीटर का परिसर शामिल है। इन सायलेंस ज़ोन्स में गाड़ी का हॉर्न, म्युज़िक या अन्य शोर गुल करने पर सज़ा का भी प्रावधान है। इसी प्रकार किसी को दिन के समय में लाउडस्पीकर का इस्तेमाल करना हो तो उसे पहले स्थानीय प्रशासन की अनुमति (permission) लेनी होती है।

हम अपने आस-पास होने वाले शोर की शिकायत (complaint) पुलिस कंट्रोल रूम में 100 या 103 नंबर पर कर सकते हैं। शिकायत करने पर पुलिस से शिकायत नंबर ज़रूर लें। इससे पता चलेगा कि आपकी शिकायत दर्ज हो गयी है।

मुंबई के पुलिस उपायुक्त (Deputy Commissioner of Police) के पास ध्वनिमापक यंत्र (Decibel Meter) होता है। इस यंत्र से जांच करने पर यदि आवाज़ का स्तर ऊंचा पाया गया तो संबंधित व्यक्ति को आर्थिक दंड (fine) या जेल की सज़ा हो सकती है।

आओ धरती को बचाएं

विदर्भ में सूखा, मुंबई में मूसलाधार बारिश, कोंकण में फयान तूफान, दक्षिण भारत में सुनामी - यह प्रकृति के कुछ ऐसे भयानक रूप हैं जिन्होंने पिछले कुछ सालों में लाखों खुशहाल ज़िन्दगियों को बर्बाद कर दिया।

आयदिन हम किसी न किसी प्राकृतिक आफ़त के बारे में सुनते रहते हैं। आपको क्या लगता है ये भगवान का कोई प्रकोप है? चाहे हम मानें या न मानें, पर इन सबके लिए हम सब खुद ज़िम्मेदार हैं। क्योंकि इसका मुख्य कारण है भारी मात्रा में हो रहा प्रदूषण।

ग्लोबल वॉर्मिंग आज सिर्फ़ एक चर्चा का विषय ही नहीं बल्कि यह एक ऐसा खतरा भी बन गया है जो धीरे-धीरे हमारे पर्यावरण को निगलता जा रहा है।

अगर हम अपने आस–पास देखें तो विदर्भ में सूखा पड़ने की वजह से आत्महत्या करने वाले किसान नज़र आएंगे। वहाँ दो साल से ठीक तरह से बारिश नहीं हुई। दूसरी तरफ 2005 की वह बारिश है जिसने मुंबई की दौड़ती-भागती जिंदगी को भी थमने पर मजबूर कर दिया।

यही नहीं, हाल ही में आया फयान (Fayan) तूफान है जिसने महाराष्ट्र के समुद्री इलाकों को हिला कर रख दिया। और कैसे भूल सकते हैं सुनामी (Tsunami) जिसने कई लोगों की जान ले ली और लाखों को बेघर कर दिया।

हम हमेशा से यही मानते आए हैं कि यह सब सिर्फ प्रकृति का खेल है। पर आज वैज्ञानिकों ने यह साबित कर दिया कि यह दुनिया भर में हो रहे प्रदूषण का परिणाम है। अब दुनिया भर के देशों ने यह तय किया है कि सबको साथ मिलकर इस समस्या का हल निकालने की ज़रुरत है। हाल ही में 120 देशों के लीडर्स कोपनहैगन (Copenhagen), डेनमार्क (Denmark) में मिले।

यह सम्मेलन 6-18 दिसंबर तक हुआ। यहाँ अमेरिका के राष्ट्रपति श्री. बराक ओबामा ने कहा; यह कहानी नहीं सच्चाई है। अगर हमने अभी कुछ नहीं किया तो यह बदलता हुआ मौसम धरती और हमारी अर्थव्यवस्था को तहस-नहस कर देगा।

वहीं ईरान के राष्ट्रपति श्री. महमूद अहमदीनेजह ने कहा; हम मानते हैं कि प्रकृति हम इंसानों को दी हुई भगवान की सबसे खूबसूरत भेंट है। अगर हममें से कोई बिना सोचे-समझे पेड़ काटता है तो वह भगवान के भेजे हुए फरिश्तों के पर काट रहा है। अगर कोई हमारे पर्यावरण को प्रदूषित करता है, तो वह बहुत बड़ा जुर्म कर रहा है।

वैसे तो दुनियाभर में आज इस मुसीबत का हल निकालने की कोशिश की जा रही है, पर ज़रुरत है कि हम इसमें अपना योगदान दें।

आओ, इस नए वर्ष में हम अपनी प्रकृति को बचाने का प्रण लें। हर इंसान को इस धरती को बचाने में अपना योगदान देना चाहिए। जब तक हम सब साथ मिलकर काम नहीं करेंगे, इसका हल नहीं निकल पाएगा।

आइये देखें कि आप क्या कर सकते हैं

पेड़ लगाइये - एक छोटा सा पौधा आपको BMC से केवल 1 रुपए में मिल सकता है। अपने एरिया या घर में कम-से-कम एक पौधा ज़रुर लगाएँ। आपका काम यहीं खत्म नहीं होता। उस पौधे को पेड़ बनाना भी आपकी ही ज़िम्मेदारी है। उसे रोज़ पानी दें। पेड़ प्रदूषण घटाते हैं और बेहतर बारिश लाने में मदद करते हैं।

प्लास्टिक बैग का इस्तेमाल न करें - प्लास्टिक हमारे पर्यावरण के लिए बहुत हानिकारक है। आप कपड़े या कागज़ का बैग इस्तेमाल करें और सामान खरीदते समय प्लास्टिक बैग लेने से मना करें।

कचरा या बेकार सामान न जलाएँ - टायर, प्लास्टिक आदि को जलाने से निकलने वाला धुआँ पर्यावरण के लिए बहुत हानिकारक होता है।

कचरा कूड़ेदान में ही डालें - कचरा इधर-उधर फेंकने से नाले जाम हो जाते हैं और सड़क पर पानी भरने के कारण रास्ते जाम हो जाते हैं। 26 जुलाई की बाढ का मुख्य कारण नालों का जाम होना ही था।

कागज़ की बर्बादी न करें - कागज़ बनाने के लिए पेड़ काटे जाते हैं। इसलिए ज़रूरत के हिसाब से ही कागज़ का इस्तेमाल करें।

SUDOKU

इस पहेली को सुलझाएं और अपने नाम के साथ आपके स्कूल में आने वाले सलाम बॉम्बे फ़ाउन्डेशन के सर / मॅडम को दें। लकी ड्रॉ में चुने गए तीन सही जवाबों को हमारी तरफ़ से पुरुस्कार दिया जाएगा।

	9	4	1				6	
1		7		3	5			8
				2			1	7
	4		8		3			2
	1	8				3	4	
9			7		1		8	
6	7			1				
8			4	6		2		1
	3				2	7	9	

आपका नामः ....

स्कूलः ....

कक्षाः ....

क्या आपको पता है कि सुडोकु कैसे खेला जाता है ?

सुडोकु खेलने के लिए ना जोड़-घटाव की और न ही गणित की जरूरत है; इस खेल में आपको केवल अंकों को सही खानों में लिखना है। खेलते समय नीचे दी गयी बातें ध्यान में रखें -

- एक चौकोन में 9 खाने होते हैं और 9 चौकोन से सुडोकु तैयार होता है।
- हर चौकोन के 9 खानों में 1 से 9 तक अंक भरने हैं।
- पर याद रखें कि खड़ी और आड़ी लाइन में 1 से 9 तक अंक ऐसे लिखें कि वो रिपीट नहीं होने चाहिएँ।

पिछली बार का सुलझा हुआ सुडोकु

2	7	3	6	5	4	1	8	9
9	8	6	3	7	1	4	2	5
1	4	5	2	8	9	3	7	6
8	6	7	4	2	3	9	5	1
4	3	9	8	1	5	7	6	2
5	2	1	9	6	7	8	4	3
6	5	4	1	3	8	2	9	7
3	9	2	7	4	6	5	1	8
7	1	8	5	9	2	6	3	4

पिछले सुडोकु के विजेता - 1) चेतना कृष्णा सोनावणे, आई. सी. एल. हाई स्कूल, वाशी 2) मो. अशरफ नूरहसन, मो. उमर रज्जब रोड उर्दू स्कूल 3) चेतल्या कृष्णा, डी. जे. बी. खोत. हाई स्कूल

पहचान कौन ?

इस मशहूर व्यक्ति की तस्वीर को पहचानिए! अपना जवाब आपके स्कूल में आने वाले सलाम बॉम्बे फ़ाउन्डेशन के सर / मॅडम को अपने नाम के साथ दें। लकी ड्रॉ में चुने गए तीन सही जवाबों को हमारी तरफ़ से पुरुस्कार दिया जाएगा।

आपका जवाबः ....

आपका नामः ....

स्कूलः ....

दिलीप सरदेसाई भारत के जाने माने क्रिकेटर रह चुके हैं। उनका जन्म 8 अगस्त 1940 में गोवा में हुआ था। उन्होंने अपने करियर की शुरुआत 1961 में इंग्लैंड के खिलाफ कानपुर में की। उन्होंने आखरी टेस्ट मैच 1972 में खेला। अपने ग्यारह साल के क्रिकेट करियर में उन्होंने 30 टेस्ट मैच खेले और 2001 रन बनाए। जिसमें शामिल हैं चार शतक और एक दोहरा शतक। उनकी सबसे यादगार पारी 1970-71 में वेस्ट इंडीज के खिलाफ थी जहाँ उनके दोहरे शतक ने भारत को कैरेबियन में पहली जीत दिलाई। उनके पुत्र राजदीप सरदेसाई जाने माने पत्रकार हैं।

पिछले पहचान कौन के विजेता - 1) गोरल रमेशभाई मकवाणा, शक्ति सेवा संघ हाई स्कूल 2) शेख निसार अहमद अब्दुल जब्बार, मो. उमर रज्जब रोड उर्दू स्कूल 3) मो. बरकतुल्लाह सैफ़ुल्लाह, मो. उमर रज्जब रोड उर्दू स्कूल

क्या आप जानते हैं ?

Rabbits and parrots can see behind themselves without even moving their heads!

The oldest food plant is Barley.

India invented the Number System. Zero was invented by Aryabhatta.

New Jersey has a spoon museum with over 5,400 spoons from almost all the states.

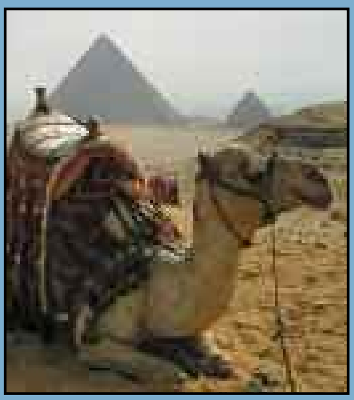

Camel's milk has 10 times more iron than cow's milk.